DR. Suman Lal Ray
Assistant professor (G. Faculty)
Deptt. Of Sanskrit
S. R. A. P college, Bara Chakia
BRABU - Muzaffarpur

5×3=15 marks

B. A (Hons.), Part -I
Subject - Sanskrit
Paper - II

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥१८॥

अन्त-वन्त—नाशवान; **इमे**—ये सब; **देहाः**—भौतिक शरीर; **नित्यस्य**—नित्य स्वरूप; **उक्ताः**—कहे जाते हैं; **शरीरिणः**—देहधारी जीव का; **अनाशिनः**—कभी नाश न होने वाला; **अप्रमेयस्य**—न मापा जा सकने योग्य; **तस्मात्**—अतः; **युध्यस्व**—युद्ध करो; **भारत**—हे भरतवंशी।

अविनाशी, अप्रमेय तथा शाश्वत जीव के भौतिक शरीर का अन्त अवश्यम्भावी है। अतः हे भरतवंशी! युद्ध करो।

तात्पर्य : भौतिक शरीर स्वभाव से नाशवान है। यह तत्क्षण नष्ट हो सकता है और सौ वर्ष बाद भी। यह केवल समय की बात है। इसे अनन्त काल तक बनाये रखने की कोई सम्भावना नहीं है। किन्तु आत्मा इतना सूक्ष्म है कि इसे शत्रु देख भी नहीं सकता, मारना तो दूर रहा। जैसा कि पिछले श्लोक में कहा गया है, यह इतना सूक्ष्म है कि कोई इसके मापने की बात सोच भी नहीं सकता। अतः दोनों ही दृष्टि से शोक का कोई कारण नहीं है क्योंकि जीव जिस रूप में है, न तो उसे मारा जा सकता है, न ही शरीर को कुछ समय तक या स्थायी रूप से बचाया जा सकता है। पूर्ण आत्मा के सूक्ष्म कण अपने कर्म के अनुसार ही यह शरीर धारण करते हैं, अतः धार्मिक नियमों का पालन करना चाहिए। *वेदान्त-सूत्र* में जीव को प्रकाश बताया गया है क्योंकि वह परम प्रकाश का अंश है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सारे ब्रह्माण्ड का पोषण करता है उसी प्रकार आत्मा के प्रकाश से इस भौतिक देह का पोषण होता है। जैसे ही आत्मा इस भौतिक शरीर से बाहर निकल जाता है, शरीर सड़ने लगता है, अतः आत्मा ही शरीर का पोषक है।

शरीर अपने आप में महत्त्वहीन है। इसीलिए अर्जुन को उपदेश दिया गया कि वह युद्ध करे और भौतिक शारीरिक कारणों से धर्म की बलि न होने दे।